विषय - संस्कृत, बी॰ ए॰ स्नातक (प्रतिष्ठा)
द्वितीय वर्ष, तृतीय पत्र डॉ॰ ओम प्रकाश आर्य
कादम्बरी - शुकनासोपदेश महाराजा कॉलेज, आरा
गद्यांश व्याख्या। दिनांक - 12/08/2020

उद्दामदर्पभटसहस्रोल्लासितासिलतापञ्जरविधृताप्यपक्रामति। मदजलदुर्दिनान्धकारगजघटितघनघटापरिपालितापि प्रपलायते।

सान्वयार्थ - (उद्दामदर्पभटसहस्रोल्लासितासिलतापञ्जरविधृताप्यपक्रामति) उत्कट अभिमान से युक्त हजारों योद्धाओं द्वारा उठायी हुई तलवाररूपी लताओं के पिंजरे में पकड़कर रखी हुई भी निकल भागती है। (मदजलदुर्दिनान्धकारगजघटितघनघटापरिपालितापि प्रपलायते) मद-जल रूपी वर्षा से अन्धकार कर देने वाले हाथियों द्वारा रचित सघन समूह द्वारा सुरक्षित रखी जाने पर भी भाग जाती है।

टिप्पणी - सिंह सदृश पशु भी मजबूत पिंजरे में बांध कर वश में हो जाते हैं किन्तु यह लक्ष्मी तो बांकुरे योद्धाओं की चमचमाती तलवारों के पिंजरे में आबद्ध होने पर भी निकल भागती है। अर्थात् शत्रुपक्ष

"The butterfly counts not months but moments, and has time enough." - Rabindranath Tagore

Scanned with CamScanner

को अवलम्बन करती है। यहाँ असिलता में पञ्जर का आरोप होने के कारण 'रूपक' अलंकार है। मदजल रूपी दुर्दिन (बादलों से भरे दिन) से दिशाओं को अन्धकारयुक्त कर देने वाले गज रूपी मेघसमूहों के चौकी पहरे से भी यह लक्ष्मी निकल भागती है। दूसरे पक्ष में चली जाती है। यहाँ श्यामत्व साधर्म्य से मदजल में दुर्दिन का आरोप किया गया है। बादलों से भरे हुए दिन को दुर्दिन कहते हैं – 'मेघच्छन्नेऽह्नि दुर्दिनम्' (अमर० 1.3.12)

पदव्याख्या – उद्दामदर्पभटसहस्रोल्लासितासिलतापञ्जरविधृता – उद्दामः दर्पो येषां ते उद्दामदर्पाः (बहु०) उद्दामदर्पाश्च ते भटाः उद्दामदर्पभटाः (क० धा०) तेषां सहस्रं (ष० तत्पु०) उद्दामदर्पभटसहस्रेण उल्लासिता (तृ० तत्पु०) असिलता एव पञ्जरं (क० धा०) उद्दामदर्पभटसहस्रोल्लासितासिलतापञ्जरे विधृता (स० तत्पु०)। अपक्रामति – अप+क्रम्+लट् प्र० पु० एकवचन।

मदजलदुर्दिनान्धकारगजघटितघनघटापरिपालिता – मद एव जलं मदजलं (क० धा०) मदजलेन दुर्दिनं मदजलदुर्दिनं (तृ० तत्पु०) ०दुर्दिनस्य अन्धकाराः (ष० तत्पु०) ते एव गजाः (क० धा०) घनानां घटाः घनघटाः (ष० तत्पु०) मदजलदुर्दिनान्धकारगजैः घटिताः घनघटाः (तृ० तत्पु०) मदजलदुर्दिनान्धकारगजघटितघनघटाभिः परिपालिता (तृ० तत्पु०)। प्रपलायते – प्र+परा+अय्+लट्।